



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

#### © Copyright Reserved with the Publishers only.

#### Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

#### Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- 4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

#### Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

## <u>Content</u>

# भारत का समाजशास्त्र

## (Sociology of India)

Question Paper–December-2022 (Solved)	1
	1
Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved)	1
Question Paper-Exam Held in March-2022 (Solved)	1
Question Paper-Exam Held in February-2021 (Solved)	1

S.	Ν	0.

## Chapterwise Reference Book

Page

## भारत की समझ : प्रमुख विमर्श ( Understanding India: Major Discources )

1.	इंडोलॉजिकल विमर्श डिस्कोर्स ( Indological Discourse )	1
2.	औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य ( Colonial Discourse )	7
3.	राष्ट्रवादी विमर्श ( Nationalist Discourse )	15
4.	सबाल्टर्न (उपाश्रित) विमर्श ( Subaltern Critique )	25
	प्र समाज : एक आलोचनात्मक बहस–I rogatting Indian Society-I )	
( Inter	rogatting Indian Society-I )	35
( Inter 5.	rogatting Indian Society-I ) जाति ( Caste )	35 49

S.No	. Chapterwise Reference Book	Page
8.	कृषक वर्ग (Agrarian Classes )	
9.	श्रमिक और उद्योग ( Industry and Labour )	
	िसमाज ः एक आलोचनात्मक बहस−II rogatting Indian Society-II )	
10.	परिवार, विवाह और नातेदारी ( Family, Marriage and Kinship )	
11.	धर्म और समाज ( Religion and Society )	105
12.	प्रजाति और नृजातीयता ( Race and Ethnicity )	116
13.	राजनीति और समाज ( Polity and Society )	124
14.	अर्थव्यवस्था और समाज ( Economy and Society )	141



# QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

भारत का समाजशास्त्र (Sociology of India)

समय : 3 घण्टे	अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं

प्रश्न 1. भारत में समाजशास्त्र विषय के विकास में औपनिवेशिक प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-8, 'प्रशासनिक परिप्रेक्ष्य'

प्रश्न 2. ए.आर. देसाई द्वारा वर्णन किए गए राष्ट्रवाद के विभिन्न चरणों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, 'ए.आर. देसाई और भारतीय राष्ट्रवाद'

प्रश्न 3. जनजाति क्या है? उनकी मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-52, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-53, प्रश्न 2

प्रश्न 4. भारत में शहरों और नगरों के सम्मुख आने वाली चुनौतियों की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए।

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय–7, पृष्ठ–61, 'कस्बों और नगरों की वृद्धि', पृष्ठ–62, 'वर्तमान नगरीकरण से संबंधित समस्याएं', पृष्ठ–65, प्रश्न 1 प्रश्न 5. भारत में कृषक वर्ग पर चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-72, प्रश्न 1

प्रश्न 6. भारत में कौन-सी विवाह पद्धतियाँ (पैटर्न) विद्यमान हैं। चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-93, 'भारत में विवाह को सार्वभौमिकता' तथा पृष्ठ-94, 'विवाह में जीवन साथी चयन के नियम'

प्रश्न 7. वेबर, मार्क्स एवं दुर्खीम के धर्म और समाज के बीच के संबंधों पर दिए गए दृष्टिकोणों पर चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-105, 'धर्म और समाज के बीच संबंध को व्याख्या करने वाले समाजशास्त्रीय सिद्धांत' प्रश्न 8. अर्थव्यवस्था और समाज के बीच क्या संबंध है? चर्चा कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-14, पृष्ठ-141, 'अर्थव्यवस्था की अवधारणा', 'अर्थव्यवस्था के प्रकार'

### www.neerajbooks.com

# **QUESTION PAPER**

**December** – 2022

(Solved)

भारत का समाजशास्त्र

(Sociology of India)

**B.S.O.C.-102** 

समय : 3 घण्टे	<i>।</i> अधिकतम अंक : 100
नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक	समान हैं
प्रश्न 1. भारत में समाज को समझने में भारतविदों के योगदान की चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 2 प्रश्न 2. ईसाई धर्म प्रचारक (मिशनरी) परिप्रेक्ष्य क्या है? क्या उन्होंने भारत में समाजशास्त्र में योगदान दिया? उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-10, प्रश्न 3	प्रश्न 5. नगरीकरण की प्रक्रिया समाज को कैसे प्रभावि करती है? चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-65, प्रश्न 1, पृष्ठ-67 प्रश्न 2 प्रश्न 6. परिवार की अवधारणा क्या है? इसके विभिन प्रकारों की चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-89, 'परिवार संस्थ
प्रश्न 3. उपाश्रित से आप क्या समझते हैं? भारत में किसी एक उपाश्रित आंदोलन की चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'उपाश्रित अवधारणा' तथा पृष्ठ-29, प्रश्न 6 प्रश्न 4. भारत में जाति व्यवस्था किस प्रकार बदली है?	तथा पृष्ठ-90, 'परिवार के प्रकार' प्रश्न 7. भारत में वंश की अवधारणा नातेदारी व्यवस्थ से किस प्रकार जुड़ी है? व्याख्या कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-95, 'नातेदारी की संस्थ प्रश्न 8. प्रजाति और नृजातीयता के बीच उपयुक्त उदाहरण के साथ अंतर स्पष्ट कीजिए।
आलोचनात्मक चर्चा कीजिए। उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-40, प्रश्न 3	उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-119, प्रश्न 1, पृष्ठ-12 प्रश्न 3 तथा पृष्ठ-119, 'प्रजाति और नृजातीयता में अंतर' ■

www.neerajbooks.com



# भारत का समाजशास्त्र

# (Sociology of India)

# भारत की समझ : प्रमुख विमर्श

(Understanding India: Major Discources)

# इंडोलॉजिकल विमर्श डिस्कोर्स (Indological Discourse)

साम्राज्य के लोग राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) सहित सात समूहों में विभाजित थे।

भारत के बारे में 'इंडिका' नामक पुस्तक में मेगास्थेन्स के विचार प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित थे। किसी स्थानीय भाषा का ज्ञान नहीं होने के कारण उनके लेखन को बहुत स्पष्टता के साथ नहीं देखा जा सकता था। उन्होंने शहरी राजनीतिक केंद्रों को देखा, किन्तु जाति व्यवस्था का वर्णन नहीं किया। अलबरूनी ने जाति व्यवस्था के चार वर्षों के सिद्धांत का उल्लेख किया, मुगल दस्तावेजों में जाति व्यवस्था के भीतर आंतरिक उप-विभाजन सम्मिलित हैं।

भारत की ऐतिहासिक यात्रा में उपनिवेशवाद ही वह कड़ी है, जिसने भारत को आधुनिकता से परिचित कराया। यूरोपीय यात्रियों के लम्बे समय से भारत यात्रा सम्बन्धी उनके वृत्तांत ने गौरवशाली शब्दों में भारतीय समाज के विषय में बताया। 18वीं शताब्दी के भारत में संस्थापित कृषि, शिल्प उत्पादन, राजशाही संस्था, कानूनी व्यवस्था, नियमित मूल्यांकन, प्रमुख सैन्य बल के साथ यूरोपीय समाज के समान राजनीतिक और आर्थिक व्यवसाय भी उपस्थित थे। हिंदू और मुस्लिम समुदायों के सन्दर्भ में जटिल सामाजिक-ध ार्मिक प्रणाली के प्रयोग पर विवेचन किया जाता था।

#### इंडोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य

भारतवादी दृष्टिकोण की अवधारणाएं, सिद्धांत और ढांचे भारतीय सभ्यता के अनुसार विद्वानों के अध्ययन से उभरकर आये। ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर उन्होंने भारतीय समाज और इसकी संरचना की समझ को बड़े पैमाने पर शास्त्रीय

## परिचय

इंडोलॉजी ऐतिहासिक वृत्तांतों का अध्ययन है, जो संस्कृत, फारसी, अरबी आदि भाषाओं में भारत के सबसे पुराने लेखन के बारे में कई विद्वानों द्वारा आयोजित किए गए हैं, जिनका उद्देश्य भारतीय समाज और संस्कृति को एक संकल्पनात्मक परिप्रेक्ष्य में समझना था।

इंडोलॉजी भारतीय समाज के अध्ययन की दिशा में प्राच्यवादी दृष्टिकोण का हिस्सा है। यह भारतीय (दक्षिण एशियाई) समाज, इसकी संस्कृति, भाषाओं, साहित्य, इतिहास और राजनीति के अध्ययन को संदर्भित करता है।

भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाओं, ग्रन्थों, इतिहास एवं संस्कृति का अध्ययन इंडोलॉजी कहलाता है। यह एशिया अध्ययन का एक भाग है। इसे भारत-अध्ययन (Indic Study) अथवा दक्षिण-एशियाई अध्ययन भी कहा जाता है।

### अध्याय का विहंगावलोकन

#### इंडोलॉजी का अर्थ

रोमन, बाजाइंटिन यूनानी, यहूदी, चीनी आदि यात्रियों के अवलोकन की छाप तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से भारतीय समाज पर दर्ज है और 1000 ईसवी से यह अवलोकन अरब, तुर्क, अफगान और फारसियों के लिखे गए भारतीय समाज के अध्ययन पर आधारित है। एक यूनानी इतिहासकार मेगास्थेन्स 302 ईसा पूर्व में सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भारत आए। उसके अनुसार मगध

#### 2 / NEERAJ : भारत का समाजशास्त्र

संस्कृत और फारसी ग्रंथों और साहित्य के अध्ययन के आधार पर किया। विलियम जोन्स और हेनरी थॉमस कोलब्रुक ने भारत और पश्चिम की प्राचीन संस्कृतियों के प्रति सम्मान रखते हुए सभ्यताओं में निरंतरता को समझने में अधिक रुचि दिखाई। कोहन के विचार में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से विदेशी यात्रियों के छुटपुट वृत्तांत से लेकर 15वीं शताब्दी तक शासकों को राजदरबारों में भारतीय इतिहासकारों के भारतीय समाज के अवलोकनों से और संस्कृत ग्रंथों के आधार पर अनुषंगी विश्लेषण संबंधी लेखन की शृंखला प्राप्त होती है। यद्यपि 18वीं शताब्दी के बाद के भारतविदों ने अधि क व्यवस्थित रूप से भारत का विवरण दिया है। पुराने लेखों के विवरण राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था बाद के युग से भिन्नता और समानता को जानने में उपयोगी हैं अर्थात इंडोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य में किसी प्रविधि के विचार से वर्गीकरण नहीं कर सकते। भारत की अवधारणा के सम्बन्ध में यात्रियों के वृत्तांत में और बाद में अल बरूनी और अबुल फजल जैसे इतिहासकारों के लेखा उपनिवेशवादियों अर्थात पूर्तगाली साहसिकों और प्रशासकों. व्यापारियों और मिशनरियों ने लिखना जारी रखा। हालांकि ये विवरण शहरी केंद्रों की सामाजिक प्रणाली की परिचालित परिभाषाओं के आंशिक अवलोकनों पर आधारित हैं। उनकी भारत की समझ एक वर्ग आधारित समाज की है, जो व्यवसायों के आधार पर विभाजित है।

संस्कृत स्रोतों के माध्यम से अल बरूनी और अबूल फजल जाति व्यवस्था के वर्ण सिद्धांत के बारे में जानते थे और जाति के आंतरिक विभागों को भी मान्यता देते थे। यह तथ्य नातेदारी पर आधारित सामाजिक रूप में जाति संदर्भ में प्रतिबिंबित है कि वर्ण प्रणाली की पाठ्य समझ दोनों जाति समूहों के रूप में व्यावहारिक परिचालन समझ के साथ सह अस्तित्व में थी। यूरोपीय विवरण मातृवंशीय और बहुपति समूहों के बारे में बताते हैं और अधिकतर अस्पृश्यता व सामुदायिक निषेध, तत्कालीन भारतीय समाज, लोगों और संस्कृति की अपेक्षा मुगल अदालतों और राजनीतिक और व्यावसायिक मामलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। 1670 में हिंदु धर्म के डच वृत्तांतों को प्रकाशित किया गया तथा 1631-1667 के बीच जाति व्यवस्था के संक्षिप्त संदर्भ के साथ फ्रांसीसी व्यापारी एवं यात्री जीन बैपटिस्ट टेवेर्नियर का लेख प्रकाशित किया गया। इसके बाद अठारहवीं सदी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय समाज और संस्कृति संबंधी अधिक व्यापक वृतान्त मिलते हैं।

भारतवादी विचारधारा 'भारत एक है' की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें एक पारंपरिक, सांस्कृतिक और उच्च सभ्यता की उपस्थिति मिलती है। हालांकि यह वह गलत धारणा प्रस्तुत करती है कि भारत की आबादी समरूप है, जिससे सभ्यता के निचले या स्थानीय लोकप्रिय स्तर को स्वीकार करने से इनकार किया जा सके। भारत की जिस 'एकता' के बारे में भारवविद् (indologist) बात करते हैं, उसमें स्थानीय, क्षेत्रीय और सामाजिक विविधता भ्रमित अथवा जटिल हो, आवश्यक नहीं है, अपितु वे एकता के दावे को मजबूत करते हैं। वास्तव में विमर्श एक पद्धति है। डुमोंट और पोकॉक (1957) के अनुसार भारत के मामले में एकता विचारों और मूल्यों में निहित है, इसलिए गहरे रूप में यह परिभाषित हो जाती है।

डुमोंट और पोकॉक (1957) का तर्क है कि शास्त्रीय इंडोलॉजी जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कार्य करती है, समाजशास्त्र के वास्तविक अस्थायी तरीकों से भिन्न है, समाजशास्त्र को जीवंत भाषा के साथ शास्त्रीय साहित्य (इंडोलॉजी) से भी परिचित होना चाहिए। अन्य समाजशास्त्री लुई डुमों, मार्सेल मास, ए.एम. होकार्ट जैसे विद्वानों ने भारत-यूरोपीय तुलना पर बड़े पैमाने पर लिखने के साथ ऐतिहासिक और सामाजिक विश्लेषण के संदर्भ में एक-दूसरे को संतुलित भी किया।

इंडोलॉजिस्ट की कुछ बुनियादी धारणाएं-

- भारत के गौरवशाली अतीत को समझने के लिए प्राचीन काल में लिखी गई पवित्र पुस्तकों को देखना चाहिए। इन ग्रंथों में भारत की दार्शनिक और सांस्कृतिक परम्पराएं निहित हैं।
- भारतीय संस्कृति और समाज के वास्तविक विचारों को ये प्राचीन पुस्तकें प्रकट करती हैं। इन पुस्तकों को भारत के भविष्य के विकास को जानने हेतु समझना चाहिए।
- प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन को प्रोत्साहित करने और संस्कृत और फारसी साहित्य और कविता के शिक्षण हेतू संस्थान स्थापित किए जाने चाहिए।

#### भारतीय परिप्रेक्ष्य का प्रभाव

उत्तर प्लासी अवधि अर्थात 1757 के बाद हमें फारसी, संस्कृत और स्थानीय भाषाओं के लेखन में वृद्धि देखते हैं, जिसने भारत के समाज और संस्कृति के व्यापक विश्लेषण को सक्षम बनाया। भारत के इतिहास, दर्शन और धर्म की गहराई और सीमा को प्रारंभिक विद्वानों द्वारा प्रयोग किये गये अनुवादों के माध्यम से जाना जाने लगा है। अलेक्जेंडर डॉव ने भारत के फारसी इतिहास का अनुवाद किया और वे हिंदू धर्म की समझ रखते थे। उन्होंने संस्कृत में लिखे गए हिंदू धर्म की समझ रखते थे। उन्होंने संस्कृत में लिखे गए हिंदू धर्म के मूल ग्रंथों के सन्दर्भ न देने की सीमाओं को भी अनुभव किया, क्योंकि इन ग्रन्थों को भारतीय समाज और संस्कृति के बारे में ज्ञान का एकमात्र स्रोत के रूप में महत्त्व देने की प्रक्रिया में आनुभविक वास्तविकता पर बहुत कम ध्यान दिया गया था।

भारतविदों ने भारतीय सभ्यता की आध्यात्मिकता को अतिरंजित करके पेश किया और भौतिक संस्कृति का अध्ययन करने के लिए नाममात्र प्रयास किया, इसलिए वे हिंदू धर्म की एक और अव्यावहारिक परिभाषा पर पहुंचे, जिसके कई प्रभाव पड़े–

## www.neerajbooks.com

- (i) इसने ब्राह्मणों की केंद्रीयता और भारतीय समाज में उनके प्रभावशाली स्थिति पर आवश्यकता से अधिक बल दिया।
- (ii) इसने भारतीय समाज के एक निश्चित दृष्टिकोण को जन्म दिया, जिसमें क्षेत्रीय विविधिता और समय के साथ हुए ऐतिहासिक परिवर्तनों का उल्लेख नहीं था।

समाजशास्त्र के भीतर भी भारतीय समाजशास्त्र के बी.एन. सील, एस.वी. केतकर, बी.के. सरकार, जी.एस. घुर्ये और लुई डुमोंट जैसे अन्य संस्थापक भी इंडोलॉजी से प्रभावित थे। भारतीय दर्शन, कला और संस्कृति से प्रभावित होने वाले भारतीय लेखन ए.के. कुमार स्वामी, राधाकमल मुखर्जी, डी.पी. मुखर्जी, जी.एस. घुर्ये, लुई डूमोंट और अन्य जैसे भारतीय विद्वानों के कार्यों में परिलक्षित होते हैं। घुर्ये भारतीय समाज की समकालीन घटनाओं को समझने के लिए नियमित रूप से संस्कृत शास्त्रीय ग्रंथों की ओर झुके। घुर्ये की विधि को बाद में स्वदेशी इंडोलॉजी के रूप में जाना जाने लगा।

डुमोंट का इंडोलॉजिकल पूर्वाग्रह भारतीय सभ्यता की एकता को मानने में वर्ण और जाति से संबंधित है। उनके अनुसार जाति की संरचना शुद्धता और प्रदूषण की विचारधारा का परिणाम है, जो

विचारों और मूल्यों का एक निश्चित और एकीकृत सांचे हैं। 1970 के दशक के उत्तरार्ध के दौरान किए गए अध्ययन सामाजिक संरचना और संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों, संबंध, विचारधारा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और जीवन, दुनिया आदि के प्रतीकवाद जैसे विषयों की विस्तृत शृंखला पर आधारित हैं, जो इंडोलॉजी के एक उल्लेखनीय प्रभाव को चिह्नित करते हैं।

#### इंडोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य की आलोचना

एडवर्ड सैद और रोनाल्ड इंडेन ने प्राच्यवाद (ओरिएंटलिज्म) का अध्ययन मुख्य रूप से इतिहास के भीतर क्रांतिकारी सांस्कृतिक प्रभुत्व की समस्या अथवा सत्ता समीकरणों द्वारा चिह्नित एक स्थान के रूप में किया। हिमाणी बैनर्जी के अनुसार जोन्स और अन्य इंडोलॉजिस्ट के कार्य मुख्य रूप से भारत पर एक वैचारिक प्रभुत्व स्थापित करने और औपनिवेशिक शासन को तर्कसंगत बनाने के उद्देश्य से निर्देशित थे। बैनर्जी ने निरंजन को उद्धत करते हुए जोन्स के कार्य की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं पर एक विधिवेत्ता और अनुवादक के रूप में टिप्पणी की, जो औपनिवेशिक शासन को तर्कसंगत बनाने के प्रयास को दिखाता है। सर्वप्रथम यूरोपीय लोगों ने अनुवाद की आवश्यकता पर बल दिया, क्योंकि यहाँ के मूल निवासी अपने स्वयं के कानूनों और संस्कृतियों के बारे में अविश्वसनीय व्याख्या कर रहे थे तथा भारतीयों को अपना 'स्वयं' का कानून देने के लिए कानुनदाता बनने की इच्छा रखते थे। समाजशास्त्री ए.आर. देसाई भारतीय समाज को संस्कृति की दृष्टि से देखते हैं और एक पाठ्य आधारित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। उनके अध्ययन वास्तविक भारत से इसकी असमानताओं, विविधताओं, एक वर्ग से दूसरे वर्ग अथवा समप्रदाय एवं शोषण से परे हैं।

#### इंडोलॉजिकल विमर्श डिस्कोर्स / 3

### बोध प्रश्न

#### प्रश्न 1. इंडोलॉजी क्या है?

उत्तर–भारतीय समाज पर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से रोमन, बाजेंटाइन यूनानी, यहूदी, चीनी, यात्रियों के अवलोकन तथा 1000 ईसवी से अरब, तुर्क, अफगान और फारसियों के अवलोकन उल्लिखित हैं। यूनानी इतिहासकार मेगास्थेन्स 302 ईसा पूर्व में सेल्युकस–1 निक्टर के राजदूत के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आए। मेगास्थेन्स के अनुसार मगध साम्राज्य के लोग अपनी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) के साथ सात समूहों में बंटे हुए ये समूह थे–

- (1) दार्शनिक संस्कार और बलि की धार्मिक क्रिया
- (2) किसानों की बड़ी जनसंख्या तथा करदाता
- (3) चरवाहे और शिकारी
- (4) कारीगर
- (5) सैनिक
- (6) प्रशासनिक कार्यों के लिए नियुक्त सर्वेक्षक/निरीक्षक

(7) राज प्रशासन में सभासद और कर निर्धारक अधिकारी।

मेगास्थेन्स के विचार 'इंडिका' में भारत के बारे में प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित थे। स्थानीय भाषा का ज्ञान नहीं होने के कारण उनके लेखन को बहुत स्पष्टता के साथ नहीं देखा जा सकता। उन्होंने शहरी राजनीतिक केंद्रों को देखा, किंतु जाति व्यवस्था का उल्लेख नहीं किया। अल-बरूनी (973 ईस्वी-1030 ईस्वी) संस्कृत म्रोतों से परिचित थे और जाति व्यवस्था के चार वर्षों के सिद्धांत का उल्लेख किया। मुगल दस्तावेजों में जाति

व्यवस्था के भीतर आंतरिक उप-विभाजन दिखाया गया है। भारत की ऐतिहासिक यात्रा में उपनिवेशवाद ने भारत को आधुनिकता से परिचित कराया। यूरोपीय यात्री लंबे समय से भारत यात्रा आ रहे यूरोपीय यात्रियों के वृत्तांतों ने गौरवशाली शब्दों में भारतीय समाज के बारे में बताया। 18वीं शताब्दी के भारत में संस्थापित कृषि और बड़े पैमाने पर शिल्प उत्पादन, राजशाही संस्था, आंशिक रूप से लिखित कानूनी व्यवस्था, लेखा-जोखा रखने और नियमित मूल्यांकन द्वारा प्रस्तुत और प्रमुख सैन्य बल राजनीतिक और आर्थिक व्यवसाय मौजूद थे, जैसे-क्लर्क, कर अधिकारी, बैंकर, न्यायाधीश, व्यापारी आदि। एक जटिल सामाजिक-धार्मिक प्रणाली के प्रयोग पर हिंदू और मुस्लिम समुदायों का दोनों के पवित्र ग्रंथों के आधार विवेचन किया जाता था। इसमें पुजारियों की श्रेणी, पदानुक्रम और धर्म के विद्वान शामिल थे।

#### प्रश्न 2. भारत के समाजशास्त्र में इंडोलॉजी ने कैसे योगदान दिया है?

उत्तर–भारतवादी दृष्टिकोण द्वारा प्रदत्त अवधारणाओं, सिद्धांतों और ढांचों पर आधारित भारतीय सभ्यता के अनुसार विद्वानों के अध्ययन से उभर कर आये। उन्होंने मुख्य रूप से ऐतिहासिक और

#### 4 / NEERAJ : भारत का समाजशास्त्र

तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया। भारतीय समाज और इसकी संरचना की समझ उन्होंने शास्त्रीय संस्कृत और फारसी ग्रंथों और साहित्य के अध्ययन पर निर्मित की। विलियम जोन्स और हेनरी थॉमस कोलब्रुक ने भारत और पश्चिम दोनों प्राचीन संस्कृतियों के प्रति गहन सम्मान रखने के साथ सभ्यताओं में निरंतरता को समझने में अधिक रुचि दिखाई।

कोहन (1990) ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से विदेशी यात्रियों के छुटपुट वृत्तांत से लेकर भारतीय इतिहासकारों की 15वीं शताब्दी तक शासकों को राजदरबारों में भारतीय समाज के अवलोकनों से और संस्कृत ग्रंथों के आधार पर अनुषंगी विश्लेषण पर लेखन की शृंखला प्राप्त होने का उल्लेख किया।

18वीं शताब्दी के बाद के भारतविदों ने भारत का विवरण अधिक व्यवस्थित रूप से दिया है। पुराने लेखों का विवरण राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था बाद के युग से भिन्न और समानताओं को समझने में सहायक है। भारत को समझने में सहायक व्यापक श्रेणियों को इंडोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य में किसी प्रविधि के विचार से वर्गीकृत नहीं कर सकते।

मेगास्थेन्स जैसे यात्रियों के वृत्तांत में और बाद में अल बरूनी और अबुल फजल जैसे इतिहासकारों, पुर्तगाली साहसिकों और प्रशासकों, व्यापारियों और मिशनरियों आदि ने ब्रिटिश शासन के आगमन तक भारत संबंधी अवधारणा के निर्माण के संबंध में लिखना जारी रखा।

उस समय की प्रचलित संस्कृति के समय विवरण शहरी केंद्रों की सामाजिक प्रणाली की परिचालित परिभाषाओं के आंशिक अवलोकनों पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, मेगास्थनीज के लेखन में मूल भाषाओं को समझने में उनकी असमर्थता के कारण, वर्ण सिद्धांत का कोई संदर्भ प्राप्त नहीं होता।

उनकी भारत की समझ व्यवसायों के आसपास विभाजित एक वर्ग आधारित समाज की है। संस्कृत म्रोतों के साथ उनके परिचय के माध्यम से अल बरूनी और अबुल फजल को जाति व्यवस्था के वर्ण सिद्धांत के बारे में जानकारी थी और वे जाति के आंतरिक विभागों को भी मान्यता देते थे। नातेदारी पर आधारित तथ्य सामाजिक रूप में जाति संदर्भ में प्रतिबिंबित करते हैं कि वर्ण प्रणाली की पाठ्य समझ दोनों जाति समूहों के रूप में व्यावहारिक परिचालन समझ के साथ सहअस्तित्व में थी। इसके विपरीत यूरोपीय विवरण मातृवंशीय और बहुपति समूहों के बारे में बताते हैं और उनमें से अधिकतर अस्पृश्यता और सामुदायिक निषेध का महत्त्व, तत्कालीन भारतीय समाज, लोगों और संस्कृति के बजाय मुगल अदालतों और राजनीतिक और व्यावसायिक मामलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

1670 में हिंदू धर्म के डच वृत्तांतों को प्रकाशित करने में जाति व्यवस्था के संक्षिप्त संदर्भ के साथ 1631–1667 के बीच फ्रांसीसी व्यापारी और यात्री जीन बैपटिस्ट टेवेर्नियर का लेख भी प्रकाशित किया गया था। इसमें अठारहवीं सदी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज और संस्कृति के बारे में अधिक व्यापक वतान्त मिलते हैं।

'भारत एक है' की विचारधारा एक पारंपरिक, सांस्कृतिक और उच्च सभ्यता की उपस्थिति का स्मरण कराती है, जो इसकी एकता दर्शाती है। भारत की आबादी समरूप बताकर सभ्यता के निचले या स्थानीय लोकप्रिय स्तर को स्वीकार करने से इनकार करना इसकी भूल है।

भारतविद् भारत की 'एकता' के बारे में बात करते हैं। उसमें स्थानीय, क्षेत्रीय और सामाजिक विविधता भ्रमित हो, यह आवश्यक नहीं है, अपितु वे एकता के दावे को मजबूत करते हैं।

डुमोंट और पोकॉक (1957) ने तर्क दिया कि शास्त्रीय इंडोलॉजी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में काम करती है, किंतु वह समाजशास्त्र के वास्तविक अस्थायी तरीकों से भी अलग है। समाजशास्त्र को जीवंत भाषा के साथ शास्त्रीय साहित्य (इंडोलॉजी) से भी परिचित होना चाहिए। उनके लिए भारत का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन समाजशास्त्र और इंडोलॉजी से संबद्ध है। लुई डुमोंट, मार्सेल मास, ए.एम. होकार्ट जैसे विद्वानों ने भारत-यूरोपीय तुलना पर बड़े पैमाने पर लिखा और ऐतिहासिक और सामाजिक विश्लेषण के संदर्भ में एक-दूसरे को संतुलित भी किया।

भारत के गौरवशाली अतीत को समझने के लिए प्राचीन काल में लिखी गई पवित्र पुस्तकों को देखना चाहिए, क्योंकि इनमें दार्शनिक और सांस्कृतिक परम्पराएं निहित हैं।

भारतीय संस्कृति और समाज के वास्तविक विचारों को ये प्राचीन पुस्तकें प्रकट करती हैं। भारत के भविष्य के विकास को जानने के लिए इन पुस्तकों को समझना चाहिए।

साथ ही प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन को प्रोत्साहित करने और संस्कृत और फारसी साहित्य और कविता सिखाने हेतु संस्थान स्थापित किए जाने चाहिए।

प्रश्न 3. इंडोलॉजिकल स्कूल के मुख्य योगदानकर्ता कौन हैं? जांच करें।

उत्तर – उत्तर प्लासी अवधि (1757 के बाद) में फारसी, संस्कृत और स्थानीय भाषाओं में वृद्धि हुई, जिसने भारत के समाज और संस्कृति के व्यापक विश्लेषण को सक्षम बनाया। भारत के इतिहास, दर्शन और धर्म की गहराई तथा सीमा को अब उन अनुवादों के माध्यम से जाना जाता है, जिन्हें प्रारंभिक विद्वानों द्वारा प्रयोग किया जा रहा है। अलेक्जेंडर डॉव ने भारत के फारसी इतिहास का अनुवाद किया और संस्कृत में लिखे गए हिंदू धर्म के मूल ग्रंथों के सन्दर्भ न देने की सीमाओं को भी अनुभव किया। यद्यपि इन ग्रन्थों को भारतीय समाज और संस्कृति के बारे में ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में महत्व देने की प्रक्रिया में, अनुभव आधारित वास्तविकता पर बहुत कम ध्यान दिया गया था।

भारतीय सभ्यता की आध्यात्मिकता को भारतविदों ने अतिरंजित रूप में प्रस्तुत किया और भौतिक संस्कृति का अध्ययन करने के